بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 07 Agust 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(ज़हूर महीने की तिथि 7,1405 हश)

# आँहुज़ूर ﷺ की बेमिसाल शुक्र गुज़ारी।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 07.08.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आँहज़रत स. के शुक्रगुज़ारी के मयार,आप स. के अमल और इरशादात का ज़िक्र जलसे से पहले मैंने किया था। इसी सिलसिले में आज भी बयान करूँगा। अल्लाह तआला के शुक्र की तरफ तवज्जो दिलाते हुए छोटी से छोटी बात पर शुक्र करने की आपं ने हिदायत फ़रमाई। हज़रत अनस बिन मालिकं बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺने फ़रमाया कि अल्लाह अपने बंदे के इस फ़ेल (कर्म) पर ख़ुश होता है कि जब वो कोई लुक़्मा खाए या कोई घूँट पीए तो उस पर ख़ुदा की हम्द करे।

हज़रत आइशाँ बयान करती हैं कि एक दिन नबी ﷺघर में दाख़िल हुए और रोटी का टुकड़ा पड़ा हुआ देखा, आपं ने रोटी का टुकड़ा उठाया, साफ़ किया और उसे खालिया। फिर फ़रमाया कि ए आइशा! क़ाबिल-ए-एहतराम शै की इज़्ज़त किया करो। जब ये रिज़्क़ की नेअमत किसी क़ौम से चली जाती है तो फिर ये उन्हें वापस नहीं मिलती। पस! ये आप ﷺ का अमल था।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: अगर हमें भी रिज़्क़ में बरकत की ख़्वाहिश है तो हमें भी अल्लाह तआला की हर छोटी से छोटी चीज़ पर उस का शुक्र करना चाहिए।

हज़रत इब्न-ए-अब्बास बयान करते हैं कि फ़तह-ए-मक्का के दिन हुज़ूर ﷺहज़रत उम्म-ए-हानीं के घर तशरीफ़ ले गए, आपं को भूख लगी हुई थी। आपं ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क्या तुम्हारे घर में कोई चीज़ है जिसे हम खाएं? उन्होंने बताया कि सूखी हुई रोटी के टुकड़ों के सिवा मेरे

पास और कुछ नहीं। मुझे शर्म आती है कि मैं ये आपं की ख़िदमत में पेश करूँ। आपं ने फ़रमाया कि वही ले आओ। फिर आपं ने रोटी के सूखे टुकड़ों को पानी में डालकर नर्म किया। वो नमक ले आईं। आपं ने फ़रमाया कि क्या कोई सालन है? उन्होंने अर्ज़ किया कि सिवाए थोड़े से सिरके के और कुछ नहीं। आपं ने फ़रमाया कि वही ले आओ। आपं ने इसे अपने खाने पर उंडेला और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की हम्द की और फ़रमाया कि सिरका क्या ही उम्दा सालन है। वो घर ग़रीब नहीं होता जिस में सिरका हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ये थे आपं के शुक्र गुज़ारी के मयार। हम इन तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों में रहते हैं और अल्लाह तआला की बेशुमार नेअमतों से फ़ायदा उठाते हैं फिर भी उस की शुक्रगुज़ारी का हक़ अदा नहीं करते।

हज़रत मुसलेह मौऊदँ फ़रमाते हैं कि तुम्हारे जिस्म पर कभी फटा हुआ कपड़ा हो तो तुम रोने लग जाते हो और कहते हो हमारी क़िस्मत कैसी फूट गई कि हमें पहनने को फटा हुआ कपड़ा मिला। मगर सहाबाँ को फटा हुआ कपड़ा मिलता तो उन का सर अल्लाह तआला के हुज़ूर झुक जाता... वो कहते कितना अच्छा कपड़ा है जो हमारे ख़ुदा ने हमें दिया। उन्हें अगर सूखी हुई रोटी का एक टुकड़ा भी चार दिन बाद मिलता तो ख़ुशी से उन की आँखों में चमक पैदा होजाती और वो कहते अल्हम्दुलिल्लाह।

हज़रत मुसलेह मौऊदँ अफ़राद-ए-जमाअत को ख़िताब करके फ़रमाते हैं कि जब तक तुम्हें ये अहसास पैदा नहीं होता कि ख़ुदा ने तुम्हें किस ग़रज़ के लिए पैदा किया है... उस वक़्त तक तुम ने काम क्या करना है। तुम को ख़ुदा ने उस मक़ाम पर खड़ा किया है कि तुम्हारा दिल ख़ुशी की लहरों से हर वक़्त पुर रहना चाहिए और तुम्हारे हर वक़्त बीदारी और होशियारी नज़र आनी चाहिए। अगर ये चीज़ तुम्हारे अंदर पैदा होजाए तो फ़ौरी तौर पर तुम में वो क़ूवत पैदा होजाएगी कि क़लील से क़लील ख़ूराक भी तुम्हें काम करने के क़ाबिल बनादेगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि ये नुस्ख़ा है जो उमूमी तौर पर हर अहमदी को और बिल-ख़सूस वाक़िफ़ीन-ए-ज़िंदगी को अपनी शुक्र गुज़ारी के मयार बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। इस की बहुत ज़रूरत है। इसी तरह अपने बीवी बच्चों में भी इस का अहसास पैदा करने की ज़रूरत है। क्योंकि जिस मक़सद के लिए वाक़िफ़ीन ने अपने आप को वक़्फ़ किया है वो बहुत अज़ीम मक़सद है और अज़ीम मक़सद को हासिल करने के लिए अज़ीम मक़सद हासिल करने वालों के नमूने सामने होने चाहिएं।

जब आँहज़रात ﷺपानी नोश फ़रमाते तो बर्तन से हट कर तीन सांसों में पानी पीते, हर सांस पर अल्लाह की हम्द करते और आख़िरी सांस पर अल्लाह का शुक्र करते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने सही बुख़ारी से हज़रत अबू हुरैराँ की एक तफ़्सीली रिवायत पेश फ़रमाई जिस में वो शदीद भूख के आलम में राह गुज़र पर बैठे गुज़रने वालों से क़ुरआन करीम की उस आयत के मअनी पूछते थे जिस में सवाल न करने वालों का ख़याल करने का हुक्म है। हज़रत अबू

हुरैराؓ ने हज़रत अबू बक्रؓ और हज़रत उमरؓ से मअनी पूछे मगर वो हज़रत अबू हुरैराؓ की कैफ़ियत न समझे। मगर जब उन्होंने आनहुज़ूर ﷺसे उस आयत-ए-करीमा के मअनी दरियाफ़्त किए तो आप ﷺ मुस्कुराए और फ़रमाया कि मेरे पीछे आ जाओ। फिर आनहुज़ूर ﷺने उन्हें एक दूध का प्याला दिया और उस दूध के प्याले से अहले-सुफ़्फ़ा ने दूध पीया और उस दूध के छोटे से प्याले में ऐसी बरकत पड़ी कि सब ने सीर होकर दूध पीया मगर उस प्याले में दूध फिर भी बच रहा। इस के बाद आनहुज़ूर ﷺने वो दूध का प्याला लिया और सब से पहले अल्लाह का शुक्र किया और फिर वो बचा हुआ दूध पिया।

आँहुज़ूर ﷺहमेशा अपने मोहसिनों को याद रखते और उन का उम्दा रंग में ज़िक्र किया करते। मसलन हज़रत ख़दीजाؓ का हमेशा ज़िक्र किया करते। इसी तरह हज़रत अबू बक्रؓ का ज़िक्र भी हमेशा ऐसे ही रंग में फ़रमाया करते थे।

जब मुसलमानों पर मुज़ालिम ढाए गए तो उन्होंने हबशा की तरफ़ हिजरत की और शाह-ए-हबशा नजाशी ने उन्हें पनाह दी। रसूलुल्लाह ﷺने उस बादशाह के इस एहसान को हमेशा याद रखा और हर मौक़े पर इस एहसान का ज़िक्र फ़रमाया।

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के बाद रास्ते में आँहज़रत ﷺकी शादी हज़रत सफ़िय्याؓ से हुई। शादी वाली रात हज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैदؓ ने रात भर आपؐ के ख़ैमे के बाहर पहरा दिया। जब आपؐ सुबह बीदार हुए और उन्हें पहरा देते देखा तो उन के इख़लास को देखते हुए आपؐ ने उन्हें दुआ दी कि ए अल्लाह! तू अबू अय्यूब की उसी तरह हिफ़ाज़त फ़रमा जिस तरह रात भर उसने मेरी हिफ़ाज़त की।

हज़रत अमरु बिन अख़तबؓ बयान करते हैं कि एक मर्तबा आनहुज़ूर ﷺने पानी तलब फ़रमाया। मैं आपؐ के लिए पानी लाया, उस में एक बाल था, मैं ने वो बाल निकाल दिया। आपؐ ने मुझे दुआ दी कि ए अल्लाह! इसे ख़ूबसूरत बनादे।

हज़रत अनसؓ के लिए आपؐ ने माल व औलाद में बरकत की दुआ दी, तो हज़रत अनसؓ कहते हैं कि मेरा माल बहुत ज़ियादा है और मेरी औलाद और औलाद की औलाद की तअदाद आज सौ तक पहुँचती है।

आप ﷺ नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स पर एहसान किया गया और उसने उस का ज़िक्र किया तो उसने उस का हक़ अदा कर दिया और जिसने इसे छुपाया उसने उस की नाशुक्री की।

आनहुज़ूर ﷺतोहफ़ा क़बूल फ़रमाते और उस का बदला भी देते। फ़रमाया जिस शख़्स को तोहफ़ा दिया जाए तो अगर उस की ताक़त हो तो तोहफ़े का बदला दे और अगर ताक़त न हो तो तोहफ़ा देने वाले की तरीफ़ करे।

आँहुज़ूर ﷺरात को नमाज़ में इतना खड़ा रहते कि आपؐ के पाँव फट जाते, ये देखकर हज़रत आइशाؓ ने कहा कि या रसूलुल्लाह !ﷺआपؐ ऐसा क्यों करते हैं जबकि अल्लाह ने आपؐ को पहले

भी और बाद में भी गुनाहों से महफ़ूज़ रखा है। आपं ने फ़रमाया कि क्या मुझे पसंद नहीं कि मैं शुक्रगुज़ार बन जाऊँ।

आँहुज़ूर ﷺनमाज़ों में इस क़दर रोते और क़ियाम करते कि आपं के पाँव सूज जाते। सहाबाँ कहते कि आपं इस क़दर आह-व-ज़ारी क्यों करते हैं तो आपं फ़रमाते क्या मैं अपने रब का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आँहज़रत ﷺकी ये हालत हमसे बग़ौर तक़ाज़ा करती है कि हम अल्लाह तआला की नेअमतों के शुक्रगुज़ार होते हुए अपनी शुक्रगुज़ारी को इंतहा तक पहुँचाएं। शुक्रगुज़ारी बैठ जाने का नाम नहीं है। शुक्रगुज़ारी अमल में मज़ीद तरक़्क़ी चाहती है। आँहज़रात ﷺतक़्वा के आला तरीन मयार पर थे। इसलिए आपं ने अब्दु-शुकूर होने का भी आला तरीन मयार हासिल किया और हमें तलक़ीन फ़रमाई कि अगर अल्लाह तआला के हक़ीक़ी अब्द होने का हक़ अदा करना है तो तुम भी अब्दु-शुकूर बनो। जूँ-जूँ अल्लाह तुम पर अपने फ़ज़्ल फ़रमाता है वैसे ही तुम अपनी इबादत के मयार ऊंचे करो और शुक्रगुज़ारी करो।

ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों के नतीजे में सुस्ती नहीं होनी चाहिए बल्कि इबादत गुज़ारी के नतीजे में आगे से आगे बढ़ना चाहिए।

हज़रत मुसलेह मौऊदँ ने एक जगह फ़रमाया है कि नादान है वो शख़्स जिसने कहा कि तेरे करम ही हैं जिन्होंने मुझे गुस्ताख़ बना दिया है। यानी अल्लाह तआला के करम हैं जिन्होंने मुझे शुक्रगुज़ार की जगह गुस्ताख़ बना दिया है। फ़रमाया ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल इंसान को गुस्ताख़ नहीं बनाया करते, ये वो ग़लत कहता है और सरकश नहीं बनाया करते बल्कि और ज़ियादा शुक्रगुज़ार और फ़रमांबरदार बनाया करते हैं। पस! तुम लोग पहले से ज़ियादा फ़रमांबरदार बन जाओ क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो भी तुम्हें दिया गया है अगर तुम उस पर शुक्र करोगे तो तुम्हें मैं और ज़ियादा दूंगा।

अल्लाह तआला हमें हक़ीक़ी शुक्रगुज़ार बनाए, हक़ीक़ी आबिद बनाए, हम हमेशा उस के फ़ज़्लों को हासिल करने वाले बनते रहें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652**
**टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131**